वार्षिक रिपोर्ट 2019 – 2020

——————————

मुस्कान के संदर्भ में—संस्था विगत 20 वर्षों से वंचित समुदायों के साथ षिक्षा, बाल सुरक्षा, हिंसा, पहचान एवं अन्य सामुदायिक मुददों को लेकर भोपाल की 22बस्तियों एवं मध्य प्रदेष के 15 जिलों में स्थानीय नेटवर्क साथियों के साथ जुड़कर कार्यरत है।

कार्य की तारतम्यता के संदर्भ में इस वर्ष जो काम हुए हैं उसका विवरण निम्नांकित है।

षिक्षा में नवाचारी परंपरा का संवर्धन –

- **जीवन षिक्षा पहल** – यह 2005 से संचालित है। यहां हाषिए पे रहने वाले समुदाय के बच्चे अपने ख़्वाबों को ताबीर देने की कोषिषों में आते हैं। साल दर साल यह बच्चे बग़ैर अपने वजूद को खोए, अपनी मेहनत और यहां के साथियों के कोषिषों के बर अक्सपरवान चढ़ते हैं। क्योंकि उन्हें यहां कोई षक़ की नज़रों से नहीं देखता और न उन पर सामाजिक, नैतिक मूल्य थोपे जाते हैं। इस प्रांगण में वह अपनी मादरी ज़बान में पढ़ना लिखना सीखते हैं जो तथाकथित मुख्यधारा के तालीम इदारों में उन्हें नहीं सिखाया जाता है। जो इस पहल की सबसे अहम और ख़ूबसूरत बात है। यहां बच्चों के लिए अलग तरह का पाठयक्रम विकसित करके उन्हें सिर्फ अंग्रेज़ी हिन्दी ही नहीं बल्कि दूसरे विषय भी बेहद रचनात्मक षैली में पढ़ाए और सिखाए जाते हैं। जिसमें प्रकृति के सभी रूपक मिटटी, बारिष, पेड़ – पौधे, पषु,गीत– संगीत के सुर,ढपली की नाद के साथ नाटक और कहानी कहना भी षामिल है।

जीवन षिक्षा पहल में 8 वीं कक्षा तक के तकरीबन 160 बच्चे पढ़ रहे हैं। इसके साथ ही हायर सेकेंडरी एवं हाइस्कूल की परीक्षा दिलवाने के लिए 35 फार्म **''राज्य ओपन परीक्षा''** के माध्यम के लिए। जीवन षिक्षा पहल के फलने फूलने में बस्ती में संचालित बालवाड़ी एवं पुस्तकालय कार्यक्रम का अहम योगदान है।

थियेटर वर्कषॉप

बच्चों के साथ गतिविधि

- **पुस्तकालय कार्यक्रम**—यह बस्ती स्तर पर संचालित किया जा रहा है। वर्तमान में 5 बस्ती (गांधीनगर, सेक्टर 3, गांधीनगर गोंड बस्ती, नवग्रह बस्ती, नया बसेरा, गौरागांव) में चल रही है। इनमें जो बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं या षाला त्यागी हैं उनके षिक्षा के रूझान को जागृत करने के लिए चित्रों, उनके पारंपरिक खेलों, कहानी आदि गतिविधियों के माध्यम से उन्हें साथ में जोड़ने का प्रयास किया जाता है।

वर्तमान में तकरीबन 483 बच्चे इससे नियमित तौर पर जुड़े हुए हैं। पुस्तकालय संचालित होने का फायदा यह हुआ है कि – बच्चों की रूचि पढ़ाई के लिए विकसित हुई है, विभिन्न तरह का साहित्य जिन्हें पढ़ने का षौक़ है उन बच्चों और उनके भाई बहनों तक पहुंचा है।इससे बच्चों की कहने, समझने और लेखन षैली का विकास हुआ है। यहां पर बच्चे दीवाल अख़बार बनाते हैं। बच्चे स्वयं कहानी और कविताएं लिखने लगे हैं।पुस्तकालय में समुदाय के बुजुर्ग व्यक्ति आकर बच्चों के सामने अपने जीवन के अनुभव तथा अपने समुदाय का इतिहास कहानी की षक्ल में सुनाते हैं। जिससे बच्चों को अपने समुदाय के विषय में जानकारी हो रही है। एक तरह से यह पुस्तकालय बच्चों के साथ परिवार, समुदाय के लिए बतौर सेतु कार्य कर रहा है। इस प्रक्रिया में एक बस्ती के बच्चों को दूसरी बस्ती के पुस्तकालय में ले जाया जाता है वहां जाकर बच्चे वहां के बाल साहित्य एवं किताबों को देखते, समझते एवं वहां की खुबियों को जानते हैं। ''**मुस्कान**'' ने बच्चों द्वारा रचित के कहानी एवं कविताओं का संकलन करके उसे प्रकाषित भी करवाया है। बच्चों को एक्सपोजर विजिट भी करवाया गया ''एकलव्य'' द्वारा संचालित

पुस्तकालय ''पिटारा'' में जिससे बच्चों की किताबों को लेकर चयन करने की क्षमता का विकास हो।

यहां के बच्चों ने षहर के विभिन्न सरकारी स्कूलों में जाकर कहानी मेला, कहानी कहना एवं कठपुतली नाटक का मंचन और संचालन किया है।

कुछझलकियां बच्चों की रचनात्मकता की –

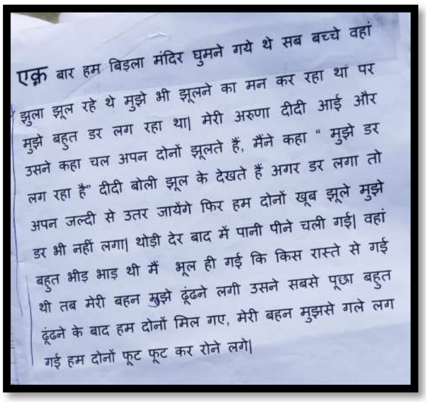

एक बार हम बिड़ला मंदिर घुमने गये थे सब बच्चे वहां झुला झूल रहे थे मुझे भी झूलने का मन कर रहा था पर मुझे बहुत डर लग रहा था। मेरी अरुणा दीदी आई और उसने कहा चल अपन दोनों झूलते हैं, मैंने कहा " मुझे डर लग रहा है" दीदी बोली झूल के देखते हैं अगर डर लगा तो अपन जल्दी से उतर जायेंगे फिर हम दोनों खूब झूले मुझे डर भी नहीं लगा। थोड़ी देर बाद मैं पानी पीने चली गई। वहां बहुत भीड़ भाड़ थी मैं भूल ही गई कि किस रास्ते से गई थी तब मेरी बहन मुझे ढूंढने लगी उसने सबसे पूछा बहुत ढूंढने के बाद हम दोनों मिल गए, मेरी बहन मुझसे गले लग गई हम दोनों फूट फूट कर रोने लगे।

बच्चों द्वारा लिखी कहानी

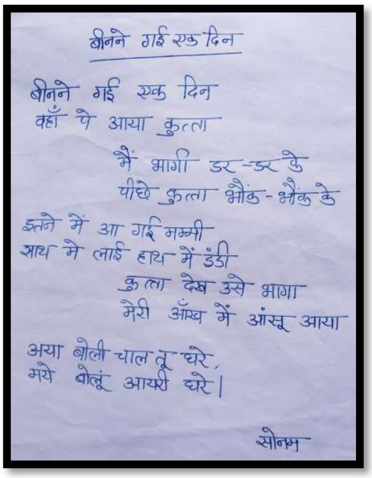

बीनने गई एक दिन

बीनने गई एक दिन
वहाँ पे आया कुत्ता
मैं भागी डर-डर के
पीछे कुत्ता भौंक-भौंक के
इतने में आ गई मम्मी
साथ मे लाई हाथ में डंडी
कुत्ता देख उसे भागा
मेरी आँख में आंसू आया
अया बोली चाल तू घरे,
मये बोलूं आयरी घरे।

सोनम

बच्चों द्वारा लिखी कविता

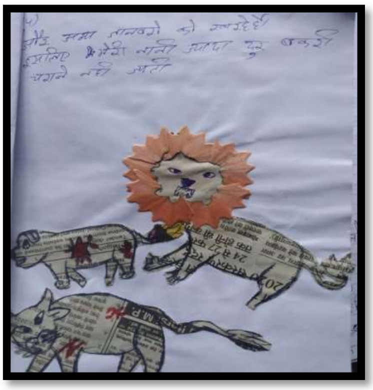

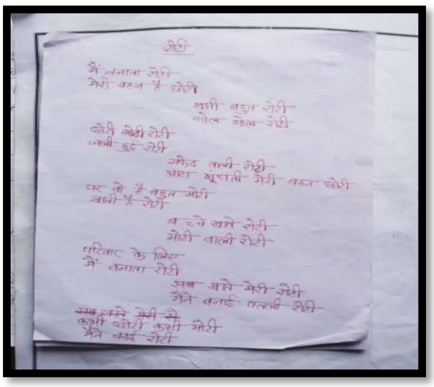

बच्चे द्वारा रचित कविता

बालवाड़ीकार्यक्रम– यह बच्चों की षिक्षा के साथ – साथ पोषण एवं देखभाल से जुड़ा हुआ कार्यक्रम है। क्योंकि माताओं के काम पर जाने के बाद उनके लौटने तक बच्चे एक सुरक्षित वातावरण में रहे। बालवाड़ी में ढाई साल के बच्चे से लेकर 6 साल तक के बच्चों की उपस्थिति रहती है। यहां पर बच्चों को रचनात्मक गतिविधियों जैसे हैंड कंट्रोल, मौखिक अभिव्यक्ति, अपने इर्दगिर्द की चीजों की समझ करवाना और गीत, कविताओं के माध्यम से सिखाया और पढ़ाया जाता है। बस्तियों में कुपोषण की स्थिति के मददेनजर यहां बच्चों को एक समय भोजन भी दिया जाता है। बाल स्वास्थ्य जैसे – बच्चों का समस्त टीकाकरण होना, बच्चों की स्वास्थ्य की मानिटरिंग के साथ – साथ यदि कोई बच्चा अति कुपोषित नजर आता है तो उसे एन. आर. सी. भी भेजा जाता है। गर्भवती एवं धात्री महिलाओं के साथ उनके स्वास्थ्य को लेकर चर्चा की जाती है।

बस्तियों की साझी पहलक़दमी –

- **बालसंगठन (चिल्ड्रन कलेक्टिव) –''आज़ाद जुगनू क्लब''**के नाम से 20 बाल संगठन ''**मुस्कान**'' के कार्यक्षेत्र में गठित हुए है। इस संगठन की नियमित बैठकें होती हैं। संगठन में कुल 312 सदस्य है जिनकी नियमित सहभागिता प्रत्येक बैठकों में होती है।

इस वर्ष संगठन की 29 बैठकें आयोजित की गई।

बच्चों के साथ चर्चा

- बाल समूह के 150 बच्चों ने मध्य प्रदेष षासन द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'लोकरंग'' कार्यक्रम में भागीदारी की और अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्षन गीत, कविता पाठ, नृत्य आदि विधाओं के जरिए किया। इसमें 50बच्चों ने षिरकत की।

बैठकों में चर्चा एवं हस्तक्षेपगत मुददे –बाल सुरक्षा, जीने के अधिकार, बाल विवाह, बाल यौनिक षोषण, धर्मनिरपेक्षता, व्यवस्थागत ग़ैरबराबरी आदि।
आयोजितबैठकों में विषेषतः उन बच्चों से चर्चा की गई जिन्होंने अपने विवाह के लिए घर में मना किया था। इस वजह से उन्हें जिस तरह की परेषानी आई एवं उससे उपजे तनाव को समझना और उसे उबरने की तकनीक से बच्चों को रूबरू करवाना ताकि वह उस स्थिति से बाहर आ सके और सामान्य ज़िंदगी जी सके।

बच्चों कें साथ देष के मौजूदा हालात और सांप्रदायिकरण की राजनीति तथा इससे प्रभावित होने वाले हाषिए लोगों की स्थिति पर संवाद सत्र संचालित किया गया। इस सत्र संवाद का मक़सद बच्चों को नफ़रत और ग़ैरबराबरी की स्थितियों को समझाना और संवैधानिक मूल्यों के तहत मिले अधिकारों से रूबरू कराना जिससे वह अपने साथ होने वाली हिंसागत ग़ैरबराबरी को समझें और उसके विरोध में अपनी आवाज़ उठाएं।

- **बाल सुरक्षा समिति** – बस्ती एवं वार्ड स्तर पर बच्चों के मुददों को लेकर 12 बाल सुरक्षा समिति बनाई गई है, जिसमें 120 सदस्य हैं। वार्ड स्तर पर बनी इन समितियों को महिला बाल विकास विभाग द्वारा बनाया गया है। इसमें स्थानीय वार्ड पार्षद, षौर्यदल के सदस्य, आषा एवं उषा कार्यकर्ता के साथ संगठन की महिलाएं भी बतौर सदस्य षामिल हैं।

बस्ती स्तर और सेक्टर स्तर के समिति के सदस्यों की क्षमतावृद्धि के लिए निरंतर बाल यौनिक षोषण, बाल स्वास्थ्य, बाल विवाह, बाल मजदूर, आदि क़ानून की जानकारीके साथ उक्त मुददों को लेकर प्रषिक्षण सत्र संचालित किए गए है। इन प्रषिक्षणों केनतीजन इस समिति के समक्ष बच्चों से सबंधित प्रकरण आए। जिनमें से कुछ प्रकरणों में एफ. आई. आर. दर्ज करवाई गई तथा दूसरे प्रकरणों को परामर्ष के जरिए सुलझाया गया।

बाल सुरक्षा समिति होने के फायदे –

- समिति के सदस्य बाल सुरक्षा के मुददे उठा रहे हैं।
- समुदाय के लोगों का इस समिति पर विष्वास बढ़ने से लोग बिना डरे अपने बच्चों की समस्याएं समिति के समक्ष ला रहे हैं।
- बाल सुरक्षा समिति भी आए प्रकरणों को बहुत ही व्यवस्थित रणनीतिगत तरीक़े से कार्य कर रही है।

इसमें से एक समूह षहर विभिन्न स्थानों एवं होटलों में कार्यरत बच्चों से मिल रहा है और उनकी समस्याओं पर बात कर रहा है। विषम परिस्थितियों में बच्चों का तुरंत मदद दे सकें इसलिए वह अपने संपर्क नंबर भी उन्हें देकर आ रहे है।

युवा संगठन – युवाओं को एक मंच देने के लिए और युवाओं को इकटठा करके उनके मसलों पर चर्चा करने तथा उनका हल निकालने के लिए युवा संगठन का गठन किया गया था। वर्तमान में 18 युवा समूह **'मुस्कान''** के कार्यक्षेत्र में निर्मित किए गए है। इन समूहों में कुल 291 युवा सम्मिलित हैं। इन समूहों की भी निरंतर बैठकें होती हैं। इस वर्ष इन समूहों की 54 बैठकें संचालित की जा चुकी हैं जिनमें विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक मुददों पर गंभीर एवं विस्तारित संवाद, सत्रों का आयोजन किया जा चुका है। इन तमाम बैठकों का मक़सद युवाओं में राजनैतिक चेतना को उभारना हैं जिससे वह व्यवस्थागत ग़ैरबराबरी को समझते हुए उसके ख़िलाफ अपनी आवाज़ उठाएं। इनकी जेंडर, यौनिकता, हिंसा एवं विभिन्न समसामयिक मुददे जो इस समुदाय की स्थिति और पहचान को प्रभावित करते हैं, पर नियमित प्रषिक्षण दिया गया। यह युवा समूह समुदाय, बस्ती एवं षहरी स्तर के हर मुददे से जुड़ाव रखते हैं और विषम परिस्थितियों में लोगों के साथ खड़े होकर उनके साथ अपनी एकजुटता प्रदर्षित करते हैं।

उक्त युवा समूह समुदाय और बस्ती स्तर के मुददों को उठाने एवं लोगों को जागरूक करने के लिए नुक्कड़ नाटकों की विधा का इस्तेमाल कर रहे हैं। जिससे वह गंभीर मसलों को भी आसानी से लोगों के सामने पेष करके उन्हें अपने साथ जोड़ रहे हैं। इन युवा समूहों को संगठनात्मक प्रक्रिया से जोड़ने के लिए षहर स्तर बने विभिन्न स्वयं सेवी संस्थाओं और संगठनों के बने समूहों की एक दिवसीय नेटवर्क बैठक आयोजित की गई थी। जिसका उददेष्य विभिन्न क्षेत्रों के युवाओं को एक मंच पर लाना, एवं

एक दूसरे के कार्यात्मक स्थितियों को समझना तथा एक संयुक्त भविष्यात्मक कार्यनीति बनाना जिससे मौजूदा परिदृष्य में बदलाव हो सके।

षहरी मजदूर संगठन—बस्ती स्तर पर लोगों को एकजुट और अपने अधिकारों के लिए जागरूक करने तथा जो सुविधाएं उन्हें षहरी बाषिंदे होने के नाते मिलनी चाहिए उसे हासिल करने के लिए यह संगठन प्रयासरत है।

- संगठन की उपलब्धि –
  - ✓ संगठन सषक्तिकरण की ओर निरंतर बढ़ रहा है। भोपाल स्तर पर संगठन की पहचान बनी है।
  - ✓ इनकी प्रतिनिधि दल की महिलाओं ने राषन कार्ड के मुददे पर अपर कलेक्टर से मुलाक़ात की और अपनी समस्याओं के उनके सामने रखा।संगठन के लोगों ने सिर्फ अपने समुदाय के लोगों की ही समस्याओं पर अपना विरोध दर्ज नहीं किया बल्कि अन्य हाषिए पर खड़े लोगों की पहचान के मुददे पर भी होने वाले विरोध के मुददों पर अपनी आवाज़ बुलंद की।

विमुक्त समुदायों के सषक्तिकरण से संदर्भित कार्य –

षहरी बस्तियों के सषक्तिकरण से संदर्भित कार्य – संगठनात्मक प्रक्रिया में लोगों को एकजुट करने के लिए उनके साथ निरंतर संवाद और बैठकें आयोजित की गई। ताकि संगठन के लोग अपने समुदाय का प्रतिनिधित्व कर सके। अपने साथ होने वाले गैर बराबरी वाले रव्वैया के संबंध में। अपने पहचान के दस्तावेज के संदर्भ में वह अपनी पैरवी स्व्यं करे सरकारी अमलों के समक्ष। इस तारतम्य में एक राज्य स्तरीय एक और पहलक़दमी की गई। जिसमें 15 जिलों के एन. टी. एवं डी. एन. टी. समुदाय के लोगों को संगठित कर एक मंच पर लाकर दो दिवसीय विमर्ष संवाद किया गया। इस विमर्ष में उनके सांस्कृतिक एवं पारंपरिक ज्ञान के साथ उनकी विलुप्त होने वाली विरासत के संदर्भ में गहन चर्चा हुई। इस विमर्ष कार्यक्रम में सामाजिक भेदभाव, पुलिस प्रताड़ना, बच्चों की षिक्षा के साथ समुदाय के विकास के लिए रणनीति बनाई गई।

इस तरह के हस्तक्षेप की वजह से समुदाय के ही युवा भोपाल और अन्य जिलों तथा राज्यों में वहां हुए प्रकरणों में अपनी एकजुटता दिखाने के लिए उक्त स्थानों में जा रहे और उन्हें सहयोग एवं संबल दे रहे हैं। संगठन के लोगों के निरंतर प्रषिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाने के मददेनजर लोग अधिकारों के तौर पर सषक्त हुए हैं और अपनी समस्याओं को लेकर सरकारी अधिकारियों के दफ्तर स्वयं जाने लगे हैं।

आवासीय छात्रावास का संचालन – मुस्कान द्वारा हाषिएगत समुदाय (पारदी, गोंड एवं कंजर समुदाय के बच्चे हैं।) के बच्चों के लिए छात्रावास भी संचालित किया जा रहा है।
वर्तमान में इस छात्रावास में बच्चों की तादाद 55 है जिसमें 20 लड़कियां एवं 35 लड़के।

बच्चों के साथ रचनात्मक गतिविधियों की जाती है। जिसमें – खेल, नाटक, गीत संगीत आदि विधाएं षामिल हैं। यहां का एक तयषुदा समय सारणी है जिसमें बच्चों के विकास में क्षमतावर्धन लिए पाठयक्रम निर्धारित हैं।

केस स्टडी –

iq"ik foxr 5 o"kZ ls eqLdku ds Nk=kokl feVVh ds ?kj esa jg jgh gSA ;g vHkh 10 oh d{kk dh Nk=k gSaaA tSlk fd mUgksaus vius fo"k; esa crk;k & ^^esjs eEeh ikik ugha gSaA ifjokj esa nks HkkbZ vkSj ,d cgu gS mudh 'kknh gks xbZ gS esjs HkkbZ tsy esa gSaA **?kj rks gekjk dHkh Fkk gh ugha]** esjk T;knk i<+us esa eu ugha yxrk] eq>s yxrk gS fd **vc i<+uk vk x;k vkSj yM+uk vk x;k** rks fQj D;ksa i<+k jgs gSa \ i<+kbZ vklku ugha gksrh] ysfdu esjs ;g lkspus ls dqN ugha gksxk i<+uk rks iM+sxk ghA eq>s xhr ukVd dk 'kkSd+ gS eSa blesa gh vkxs tkuk pkgrh gwa] viuk dqN djuk pkgrh gwaA dksf'k'k d:axh fd ^^eqLdku^^ ls tqM+h jgwaA ;gka vkus okys u, cPpksa dks fFk;sVj fl[kkÅaxhA cLrh esa yM+fd;ksa dk ,d xzqi cukÅaxh D;ksafd gekjs ;gka yM+fd;ksa dks ckgj vkus ugha nsrs gSaA eq>s ;gka vPNk yxrk gS D;ksafd eSa tSlk pkgrh gwa ml rjg ls jg

2. केस स्टडी –

Hkkjr flag datj 2019 ls eqLdku ds feVVh ds ?kj Nk= esa jgdj i<+ jgs gSaA ;s ftyk cSjfl;k ds xkao <sdiqj ds jgus okys gSaA tSlk fd mUgksaus vius lanHkZ esa crk;k fd & ^^eSa ;gka nks lky ls jgk gwaA vHkh eSa 5 oha d{kk dh i<+kbZ dj jgk gwaA ;gka vkus ij 'kq: esa cM+k vthc lk yxk fd eSa dkSu lh txg ij vk x;k gwaA fQj nksLr cu x, rks vPNk yxus yxkA ;gka vkus ds igys eSa xkao esa 'kjkc cspus dk dke djrk FkkA **dekus ds fy, rks djuk iM+sxk ekj iM+s ;k xnZu dVsA** ;gka vkdj le>k fd eSa tks dke djrk Fkk og Bhd ugha FkkA vc eSa ;g dke NksM+awxk vkSj xkao ds nwljs cPPkksa dks Hkh bl dke ls fudkywaxkA eSa Vhpj cuus dh i<+kbZ d:axk ;fn ugha cu ik;k rks Qy] Qwy vkSj ikS/ks yxkus dk dke d:axk] eq>s ns[kdj

विचारधारा/ सोच के साझीकरण संदर्भित –''मुस्कान'' किताबों और लेखन सामग्रियों तथा संदर्भ सामग्री बतौर अपनी सोच के प्रसार के लिए इस्तेमाल करती है। इसमें इस साल जो काम किए गए वह हैं –

- **पब्लिकेषन** –''**कहां है मेरी कहानी**'' यह उन हाषिएगत लोगों के जीवन की बानगी है। जो साहित्य और लेखन की दुनिया से ग़ायबतर हैं। जिनके संदर्भ में लेखक और साहित्यकार लिखना मुनासिब नहीं समझते।''**मुस्कान**'' इन वंचित समुदायों के मुददों और हालातों से जन समुदाय को रूबरू करवाती हैं। जिससे आमजन इन लोगों के विषय में बनी सामाजिक सोच के इतर जान सके और उनके प्रति संवेदनषील हो।

इस कड़ी में ''**मुस्कान**'' ने एक सेमिनार का आयोजन किया था। इसमें मध्य प्रदेष सहित अन्य राज्यों के लेखकगण, चिंतक, विचारक, वंचित समुदाय के जन, बच्चे और उनके मुददों पर कार्यरत लोग भी इसमें षामिल थे। इसका उददेष्य था कि वंचित समुदाय के मुददों के साथ उनके बच्चों के हालात को भी लोगों के समक्ष लाना जो मुख्यधारा के बाल साहित्य से भी अछूते रहते हैं।

इस सेमिनार में उपस्थित चिंतकों और लेखकों के द्वारा उक्त समुदाय के संबंध कही कुछ महत्वपूर्ण बातें –

- **सुजाता सुरपेले तेलांगाना की एक्विविस्ट और स्कालर हैं**–हाषिए पे रहने वाले समुदाय के संदर्भ में इन्होंने कहा कि– '' मैं स्वयं एक दलित परिवार से आती हूं। मैंने हमेषा दलित पृष्ठभूमि के लोगों के विषय में देखा है कि वह लोगों के लिए अदृष्य होते हैं।उनकी मौजूदगी को हमेषा नज़रअंदाज़ किया जाता है।''
- आदिवासियों और अल्पसंख्यक के साथ एक प्रकार का पक्षपात है साहित्य में भी। इनके बारे में लिखने वाले लेखकों को लगता है कि वह इनके संदर्भ में लिखकर इन पर एहसान कर रहे हैं।

➢ **लक्ष्मण गायकवाड़ लेखक** – उनकी बानगी है कि –''मैं 1976 से लेखन क्षेत्र में हूं।मैं जिस समुदाय से आता हूं वहां के लोगों के पास न षहर है, न गांव है और न कोई स्थान। हम किसी भी स्थान पर 7 दिनों से ज्यादा नहीं रह सकते इसलिए हमें पुलिस से अनुमति लेनी पड़ती है और बताना पड़ता है कि हमने कोई अपराध नहीं किया।

''**मजल**'' जिसका तात्पर्य ''एक जगह मिलना या इकटठा होना है।'' यह पारदी समुदाय की परिस्थितियों पर एक अध्ययन के साथ विष्लेषणात्मक दस्तावेज है। इसका संकलन तथा प्रकाषन ''**मुस्कान**'' ने किया।

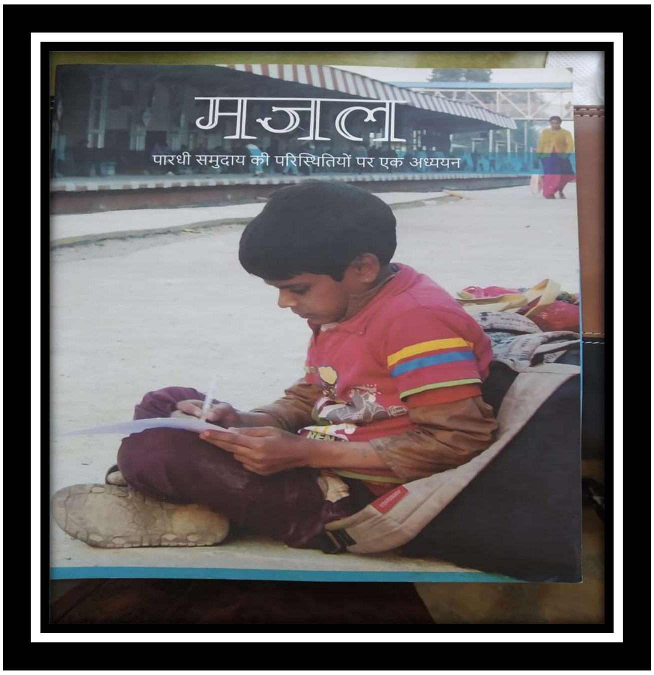

इस रपट का संक्षेप है कि – यह इस समुदाय के ऐतिहासिक परिदृष्य को रेखांकित करता है। इसमें इस समुदाय के इतिहास के साथ किस तरह से जनजातियों के लिए बने क़ानून चाहे वह आज़ादी के पहले के हों या आज़ादी के बाद। सभी जगहों में इन समुदायों को हाषिए पे रखने की रिवायत को निरंतर ज़िंदा रखा गया है, जिसका ख़ामियाजा आज तक इस समुदाय के लोगों को भुगतना पड़ रहा है।

जिसके एवज में अपनी गरिमा के लिए इनकी जददोजहद का एक नक्षा भी इस रपट में खींचा गया है।

ताकि आम लोग इसे पढ़कर इनके संदर्भ में फैली मिथक की अवधारणा से बाहर निकलें।

आजीविका उपलब्धता संदर्भित कार्य –युवाओं को रोज़गार से जोड़ने के लिए ''**मुस्कान**'' द्वारा 6 बस्तियों युवाओं के साथ उनकी रूचिनुसार विभिन्न तरह के रोज़गारमूलक प्रषिक्षण आयोजित किए गए। जिसमें ''भोपाल बेकिंग कंपनी'', एवं ''होटल प्रबंधन संस्थान'' जैसे नामी संस्थाओं में युवाओं को प्रषिक्षण दिलाया गया। जिससे वह सामाजिक मिथक को तोड़कर समाज में अपनी पहचान को स्थापित कर सकें।

प्रषिक्षण सत्र

इस कड़ी में युवाओं ने अपने छोटे – छोटे काम जैसे – बिरयानी, क़बाब, पकौड़े एवं पानी – पूरी की दुकानें बस्ती तथा षहर के विभिन्न इलाक़ों में षुरू किए।

इसमें किषोरियों द्वारा पानी पुरी का ठेला लगाना भी षामिल था। जो कि सामाजिक मान्यता को चुनौती देने वाला कार्य है। इस कार्य में अभी तक सिर्फ पुरूषों का ही वर्चस्व क़ायम रहा था जिसे इन किषोरियों ने तोड़ा।

स्व रोज़गार प्रषिक्षण प्रकिया के उपरांत हस्त निर्मित वस्तुएं बैग्स, डायरियां मास्क, आर्गनिक साबुन, आर्गनिक कंपोस्ट इत्यादि भी बनाई गई और उसे षहर के विभिन्न क्षेत्रों के बेचा जा रहा हैं।

आर्थिक सषक्तता और सामाजिक मान्यता को चुनौती देते हुए, मुस्कान द्वारा युवाओं एवं महिलाओं को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराए गए हैं जिससे वह अपने स्व रोजगार स्थापित करके परिवार का भरण – पोषण कर रहे हैं।

पैरवीगत हस्तक्षेप –

- सरकारी विभागों एवं अधिकारियों के साथ जुड़ाव के कारण लोगों को लाभ मिला।
- सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं की लोगों तक पहुंच सुनिष्चित।
- षिक्षा की गुणवत्ता के सुधार और सभी हाषिए पर रह रह बच्चों तक षिक्षा की पहुंच को लेकर 2 ज़िला स्तरीय बैठक आयोजित की गई।
- ज़िला स्तरीय समन्वय बैठक आयोजित की गई, विभागों के साथ बेहतर तालमेल बनाने के लिए। इसमें महिला बाल विकास विभाग, सामाजिक न्याय, श्रम एवं स्वास्थ्य विभाग, नगर निगम, अनुसूचित जाति, जनजाति विभाग, पुलिस विभाग, आदि षामिल रहे।

पर्यावरण संरक्षण से संदर्भित –बस्ती स्तर पर इस विष्वव्यापी मुददे पर लोगों की गंभीरता को उभारने तथा इसके महत्व को समझाने के लिए समुदाय के साथ विभिन्न तरह की गतिविधियां की जा रही है। जो निम्न है –

- **जागरूकता कार्यक्रम** – उक्त मुददे पर समुदाय के लोगों, युवाओं, संगठन की महिलाएं और बच्चों के साथ निरंतर चर्चा की गई फलस्वरूप युवाओं ने अपने आस पास के क्षेत्र में किचन गार्डन विकसित किए। जिसमें सूरज नगर और एहसान नगर षामिल है।

- **परमा कल्चर**–प्राकृतिकतरीक़े से पर्यावरणबचाने की एक अनूठी पहलहै।

इस पद्धति को अपनाकर ''मुस्कान'' अपने कार्यक्षेत्र में इसके प्रसार के लिए कार्य करके लोगों को जागरूक कर रही है।

- **कचरा प्रबंधन**—बस्ती से निकलने वाले कचरे के प्रबंधन एवं इस्तेमाल के लिए उसको गीले एवं सूखे कचरे के अनुसार लोगों को इकटठा करने का तरीक़ा बताया गया।

युवाओं को घर पर ही गीले कचरे से खाद बनाने की जानकारी प्रदान की गई। समुदाय में ही युवाओं द्वारा कंपोस्ट बनाए गए और खाद बनाने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। परिणामस्वरूप प्रतिदिन 50 किलो वेस्ट रोज़ाना कंपोस्ट पिट के लिए निकल रहा है। इससे बने खाद को युवा आर्गनिक बाज़ार में बेचकर आय अर्जित कर रहे हैं। बस्ती के इस कार्य की जानकारी मिलने के उपरांत नगर निगम के अमले ने ''**मुस्कान** '' को ''**स्वच्छ ब्रांड एंबेसडर**'' का प्रमाण पत्र दिया।

क्षमतावृद्धि आधारित कार्य (प्रषिक्षण, कार्यषालाएं एवं उन्मुखीकरण) –

- ✓ बाल सुरक्षा के मुददे पर 2 प्रषिक्षण वार्ड स्तर के 25 प्रतिभागियों को दिए गए।
- ✓ विभिन्न विभागों के साथ बेहतर समन्वय के मददेनजर 2 समन्वयन बैठकें की गई।
- ✓ आई. सी. डी. एस. कार्यकताओं के साथ 2 प्रषिक्षण साथ किए गए।
- ✓ बाल सुरक्षा समिति के सदस्यों एवं षौर्यदल के कार्यकर्ताओं के साथ सेक्टर वार प्रषिक्षण आयोजित किए गए।
- ✓ 8 प्रषिक्षकों का प्रषिक्षण कार्यक्रम संचालित किए गए।

एक्सपोज़र विजिट–

- ✓ बच्चों में वैज्ञानिक चेतना के विकास के लिए साईंस सेंटर का विजिट करवाया गया। ताकि बच्चे सामाजिक मिथक से परे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से चीजों एवं स्थितियों का विष्लेषण करना सीखें।
- ✓ दिल्ली स्थित ''जोड़ो ज्ञान '' एवं ''अंकुर'' में विजिट किया गया। ''जोड़ो ज्ञान '' का प्रारंभ 2004 में हुआ था। यह संस्था दिल्ली के स्कूलों सहित अन्य राज्यों (पंजाब, षिलांग, गंगटोक एवं असम) के 460 स्कूलों में कार्य कर रही है।इसी तरह अंकुर 1993 से बच्चों के लेखन षैली, विषेषतः बच्चों से कहानी लिखने की षैली पर कार्यरत है।
- ✓ बाल सुरक्षा समिति के सदस्य एवं आई. सी. डी. एस. के कार्यकर्ताओं को बाल आयोग, बाल कल्याण समिति एवं चाईल्ड लाइन का विजिट करवाया गया।जिससे कि यह लोग उक्त संस्थाओं की कार्यप्रणालियों को देखें समझे और उनसे मिलने वाले सहयोग को विपरीत परिस्थितियों मेंबच्चों के हित और विकास के लिए इस्तेमाल करें।

✓ आजीविका प्रषिक्षण एवं कार्यक्रम को गति देने के लिए वर्धा महाराष्ट्र के ''सेवाग्राम संस्थान'' का भ्रमण किया गया। यहां पर बच्चों को षिक्षा के साथ – साथ उनके रूचिनुसार कौषल विकास के कार्य से भी जोड़ा

जाता है, जिससे वह आत्मनिर्भर बन सके। यहां के कुछ बच्चे खेल के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के प्रतिभागी बने है। इस भ्रमण का उददेष्य वहां के मॉडल को समझकर बच्चों के साथ होने वाले काम को विस्तारित करना है।

विषिष्ट आयोजन–

- ✓ विभिन्न समुदाय जैसे मोची, कठपुतली, मुस्लिम एवं पारदी समुदाय के बच्चों की सभा का गठन किया गया। इसमें बच्चों के साथ गीत, संगीत, थियेटर, और कहानी कहना आदि जैसी बहुत सारी गतिविधियां संचालित की गई। इस प्रक्रिया में बच्चों के परिवार के साथ स्थानीय जन प्रतिनिधियों को भी षामिल किया गया। इस सभा के गठन और कार्यक्रम आयोजित करने का उददेष्य बच्चों को अन्य समुदाय के बच्चों के समीप लाना तथा समाज की हाषिएगत समाजों के लिए विरोधाभासी सोच को बच्चों के मानस में पनपने से रोकने का प्रयास करना था।
- ✓ 19 जनवरी एकजुटता दिवस '' – पारदी एवं अन्य हाषिएगत समुदाय के साथ हो रहे ग़ैरबराबरी एवं उत्पीड़न के मुददे को राज्य स्तर पर उठाने एवं सषक्त करने की एक की प्रक्रिया है। जिसमें वंचित समुदाय के लोग एक मंच पर एकत्रित होते हैं और समुदाय के साथ पुलिस के अत्याचार, प्रताड़ना एवं समाज तथा सरकार के भेदभाव वाले बर्ताव को लेकर विचार विमर्ष करने के उपरांत एक रणनीतिक योजना बनाते हैं ताकि सभी समुदाय एकजुट होकर अपने मौलिक एवं संवैधानिक अधिकारों और मूल्यों के तहत उन्हें न मिलने वाले पहचान एवं गरिमा की लड़ाई लड़ सके।

———————————————————

——————————